ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 9-13
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

# गाजीपुर जनपद (उ0प्र0) आवर्ती विपणन तन्त्र एवं ग्रामीण विकास

**बब्बन कुमार**

असि0 प्रोफे0– भूगोल विभाग, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महेन्द्र पी0जी0 कालेज, हलधरपुर– मऊ (उ0प्र0),भारत

**Received- 15 .09. 2018, Revised- 23 .09. 2018, Accepted - 29-09-2018 E-mail: kumar05091978@gmail.com**

***सारांश–*** *ग्रामीण विपणन तन्त्र और ग्रामीण विकास किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक विकास प्रतिरूप को प्रभावित करते है, क्योंकि ग्रामीण अर्थतन्त्र के रूप में विपणन तन्त्र कार्य करता है। सामान्यतया इसका अर्थ विभिन्न प्रकार के विपणन केन्द्रों और उसकी कार्यात्मक संरचना को प्रभावित करने वाले कारकों के अर्न्तसम्बन्धित प्रतिरूप से है। किसी क्षेत्र में कोई भी विपणन केन्द्र क्षैतिज कार्यात्मक सम्बन्धों के साथ–साथ उर्ध्वाधर रूप में दूसरे विपणन केन्द्रों से सम्बन्धित रहता है, क्योंकि तभी वह क्षैतिज अर्थतंत्र में विभिन्न प्रकार के अतिरिक्त उत्पादनों को बाजारोन्मुख स्वरूप प्रदान करता है और विभिन्न आवश्यकताओं को बाह्य केन्द्र के माध्यम से पूरा करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक बाजार केन्द्र किसी न किसी विपणन तन्त्र का अंग होता है। यह विपणन केन्द्र मंडी, नगरीय विपणन केंद्र या कोई भी विशिष्ट विपणन केन्द्र हो सकता है।*

**मुख्य शब्दः विणपन, विनिमय, उर्ध्वाधर, आवर्ती, अनौपचारिक, समुदाय, आधुनिकीकरण, हस्तशिल्प, निहितार्थ।**

अध्ययन क्षेत्र जनपद गाजीपर आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ा क्षेत्र है। जहां कृषि एवं उससे सम्बन्धित कार्यकलाप ही आर्थिक विकास के आधार है। इस सम्बन्ध में ग्रामीण कृषि पर आधारित अर्थतन्त्र कृषि के विविधिकरण को प्रोत्साहित कर सकता सकता है। जिसके माध्यम से सक्षम विपणन तन्त्र होने पर अनेक अनुषंगी कार्य–कलाप विकसित हो सकते हैं। इसलिए अध्ययन क्षेत्र में विपणन तन्त्रों की पहचान एवं उनके ग्रामीण विकास प्रतिरूप का विश्लेषण करते हुए क्षेत्र के क्रेता–विक्रेता व्यवहार और विपणन और प्रभाव प्रदेश का अध्ययन करके आर्थिक विकास में इनके योगदान को स्पष्ट किया गया है

**सामान्य विपणन तन्त्र –** यहां समान्य विपणन तन्त्र से तात्पर्य सम्पूर्ण अध्ययन क्षेत्र में विनिमय कार्य को संचालित करने वाली विभिन्न विपणन श्रृंखलाओं के अन्तर्सम्बन्धित क्षेत्रीय प्रतिरूप से है। जिसके अन्तर्गत आवर्ती विपणन केन्द्र, दैनिक विपणन केन्द्र, मंडी केन्द्र, नगरीय विपणन केन्द्र सभी सम्मिलित हैं। पूर्व अध्ययन में विभिन्न प्रकार के विपणन केन्द्रों के क्षेत्रीय वितरण, जनसंख्या और क्षेत्रफल के सन्दर्भ में उनके क्षेत्रीय प्रतिरूप का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि क्षेत्र में विपणन केन्द्रों का विपणन प्रतिरूप असमानता लिए है। अध्ययन क्षेत्र के पश्चिमी एवं पूर्वी भागों में जहां आवर्ती विपणन केन्द्रों की प्रधानता है, वही नगरीय विपणन केन्द्र नगण्य है। परिणामस्वरूप दैनिक विपणन केन्द्रों के अभाव के कारण वहां की ग्रामीण जनसंख्या को अपने अतिरक्ति उत्पादनों के विपणन और अन्य वस्तुओं के क्रय में कम लागत एवं समय का व्यय करना पड़ता है। जनपद के दक्षिण भाग एवं उत्तरी भाग में आवर्ती विपणन केन्द्र दूर–दूर होने के कारण वहां की ग्रामीण जनता को दूर–दूर जाकर अपनी उपयोग की वस्तुओं को क्रय करना पड़ता है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के दक्षिण एवं पूर्वी भाग में विपणन तन्त्र के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्रीय विपणन कार्यो की गहनता का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित प्रतिरूप उभरते है (चित्र संख्या 1)।

1. गाजीपुर नगरीय विपणन केन्द्र अध्ययन क्षेत्र के लगभग सभी महत्वपूर्ण नगरीय एवं ग्रामीण दैनिक विपणन केन्द्र से सम्बन्धित है क्योंकि क्षेत्र में अरीय यातायात प्रतिरूप होने के कारण तीव्रगामी वाहनों की सुविधा उपलब्ध है। जिससे नगर केन्द्र का उर्ध्वाधर अन्तर्सम्बन्ध सभी महत्वपूर्ण सड़क मार्गो के सहारे स्थित विपणन केन्द्रों तक है। जैसे गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, करीमुद्दीनपुर, रेवतीपुर, कासिमाबाद, नवली, जलालाबाद आदि सम्बन्धित हैं। इनके बीच में नगर केन्द्र एवं इन विपणन केन्द्रों के बीच उर्ध्वाधर सर्म्पक हैं।

2. अध्ययन क्षेत्र में दैनिक आवर्ती विपणन केन्द्रों का उपतन्त्र विकसित है। जनपद के पूर्वी भाग में नखतपुर, रामपुर, दक्षिण गोपालपुर, बभनौली, पश्चिम में आदान आदि स्वतन्त्र उपतन्त्र है, जो उर्ध्वाधर विपणन के साथ–साथ क्षैतिज विपणन कार्यो को संचालित करते हैं। समान्य रूप में क्षैतिज विपणन कार्य दो प्रकार के विपणन तन्त्र द्वारा संचालित होता है।

**i) औपचारिक विपणन तन्त्र –** औपचारिक विपणन तन्त्र के अन्तर्गत विपणन कार्य सार्वजनिक विपणन केन्द्र संचालित करते हैं। अध्ययन क्षेत्र गाजीपुर, रेवतीपुर, मुहम्दाबाद, सैदपुर ऐस बड़े केन्द्र है, जहां कृषि उपजों का विपणन किया जाता है। इसके साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र की अनके संस्थायें एफ0सी0आई0/एन0आई0एफ0ई0डी0 आदि भी कृषि उपजों का क्रय करती है और उनका वितरण भी उचित मूल्य की दुकानों द्वारा किया जाता है।

**अनुरूपी लेखक**

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

**ii) अनौपचारिक विपणन तन्त्र** – इसके अन्तर्गत विपणन प्रक्रिया का विकास क्षेत्रीय आवश्यकताओं के सन्दर्भ में स्वयं होता है। कृषि अर्थतंत्र में इस प्रकार का विपणन तन्त्र आधिक प्रभावी होता है। यह श्रृंखलाबद्ध विपणन केन्द्रों द्वारा संचालित होता है। जिसके अन्तर्गत एक घर अथवा आवर्ती विपणन केन्द्र से लेकर दैनिक विपणन केन्द्र अथवा नगरीय विपणन केन्द्र तक अन्तर्सम्बन्धित होते है। क्षैतिज विपणन कार्यो के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में स्थित आवर्ती विपणन केन्द्र स्थानीय व्यापारियों द्वारा कृषि उपजों का संकलन करते है अथवा कृषि उत्पादक उनका प्रत्यक्ष विपणन करते है। इसके अतिरिक्त नगरों में स्थापित बड़े व्यवसायियों के ऐजेंट और स्थानीय व्यापारी विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं अथवा फुटकर विक्रेताओं को कृषि उपजो की आपूर्ति करते है। इस तरह अनौपचारिक विपणन तन्त्र में ग्रामीण विक्रेता और आवर्ती विपणन केन्द्रों का श्रृंखलाबद्ध प्रतिरूप मिलता है, जहां क्षेत्र के उत्पादों से लेकर विभिन्न क्रम के विपणन केन्द्रों द्वारा क्षैतिज विपणन कार्य किया जाता है। दोनों प्रकार के विपणन तन्त्र क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में अनौपचारिक विपणन तंत्र का अधिक विकास मध्यवर्ती, पूर्वी–दक्षिणी तथा दक्षिणी भाग में हुआ है। अध्ययन क्षेत्र मे क्षेत्रीय रूप से निम्नलिखित उल्लेखनीय अनौपचारिक विपणन तन्त्र विकसित हैं–

चित्र संख्या–1

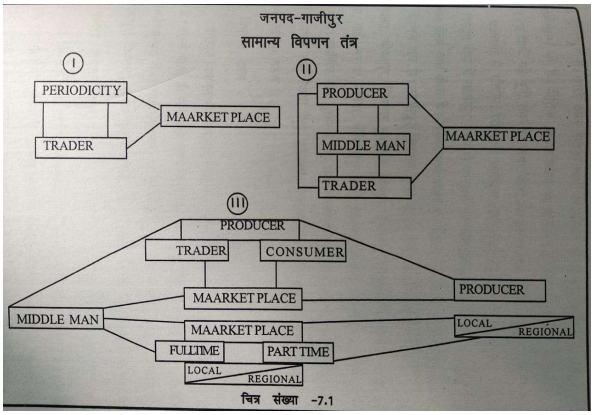

चित्र संख्या -7.1

**1. गाजीपुर नगरीय विपणन तंत्र** – अध्ययन क्षेत्र में गाजीपर नगरीय विपणन तन्त यद्यपि उर्ध्वाधर रूप में क्षेत्र के सभी महत्वपूर्ण नगरीय विपणन केन्द्रों से सम्बन्धित है तथा उनको सेवाओं तथा वस्तुओं की आपूर्ति करते है, लेकिन गाजीपर से चारों ओर सड़क मार्गो के प्रसार होने के कारण समीपवर्ती अधिवासों से इसका क्षैतिज अर्न्सम्बन्ध भी है। क्षैतिज अन्तर्सम्बन्ध का विस्तार सड़क यातायात के सन्दर्भ में नगर केन्द्र से लगभग 1/2 घण्टे के दूरी तक है। नगर केन्द्र से मुहम्मदाबाद मार्ग पर पूर्व मे खालिसपुर, दक्षिण मे सरहुला, पश्चिमी में सौराम, उत्तर में संगीपुर तक इसका विस्तार हैं चित्र संख्या के अवलोकन से स्पष्ट है कि इतने विस्तृत क्षेत्र में गाजीपुर नगर से वस्तुओं एवं सेवाओं का लाभ उठाते है। आपूर्ति छोटे–छोटे दैनिक विपणन केन्द्र तक होती है। सड़क मार्ग जाल के विकास के कारण ही गाजीपुर नगरीय विपणन तन्त्र उच्च विपणन केन्द्र तक होती है। गाजीपुर विपणन तन्त्र के अन्तर्गत लगने वाले आवर्ती विपणन केन्द्रों में नखतपुर, नेवादा, भोजापुर, पिपनार बुद्धोपुर, तियरा, भड़सर, अक्सपुर, देवकठिया, बघैल, अरखपुर, भटेहू, धरिया, गाई, मरदह, संगेरा, गोविन्दपुर आदि विपणन केन्द्र हैं। ये सभी विपणन केन्द्र नगर के उपान्त क्षेत्र में है। इसलिए यहां मुख्य दैनिक विपणन केन्द्रों तक बस अथवा ट्रक यातायात, लघु दैनिक तथा आवर्ती विपणन तक टैक्सी, टैम्पू यातायात प्रचलित है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों से नगर केन्द्रों तक क्षैतिज सम्पर्क अधिक गहन है।

**2. जंगीपुर विपणन तन्त्र** – जंगीपुर विपणन केन्द्र गाजीपुर से मऊ मार्ग पर स्थित हैं। उर्ध्वाधर रूप मं यह गाजीपुर से सम्बन्धित है। इसके साथ ही मनिहारी कासिमाबाद जैसे– दैनिक विपणन केन्द्रों और आवर्ती विपणन केन्द्रों से अनतर्सम्बन्धित हैं। इसकी विपणन गहनता सड़क यातायात बबरी, रानीपुर, पृथ्वीपुर, बयाना, बरही, जगन्नाथपुर, पिपनार, सराय बुजूर्ग, इन्दौर, विरनो आदि दैनिक एवं आवर्ती विपणन केन्द्र हैं।

**3. सैदपुर बाजार विपणन तन्त्र** – यह विपणन केन्द्र गाजीपुर–वाराणसी मार्ग पर स्थित है। यहां सड़क यातायात के साथ–साथ ट्रेन मार्ग की भी सुविधा है। इसका उर्ध्वाधर सम्पर्क वाराणसी, गाजीपुर, सादात, जखनियां, बाजार से है। इसका विस्तार भवंरपुर, सउनाखास, विक्रमपुर, बेलहरी, खानपुर, मऊथा, गौरी, देवचन्द्रपुर, देवपार, सिसवान तक है।

**ग्रामीण विकास की संकल्पना** – भूगोल के अन्तर्गत विकास और आर्थिक क्रिया–कलाप का क्षेत्रीय सम्बन्ध होता है अर्थात किसी क्षेत्र अथवा प्रदेश के सन्दर्भ में सम्बन्धित क्षेत्र और जनसंख्या के आधार पर विभिन्न संरचनात्मक

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

तत्वों का रूपान्तरण ही ग्रामीण विकास है। संरचनात्मक तत्वों के अन्तर्गत अर्थतन्त्र के विभिन्न आयाम आर्थिक, सामाजिक, संस्थागत और राजनीतिक तंत्र सम्मिलित होते हैं। किसी भी क्षेत्र में इन्हीं तत्वों के अनुसार और सापेक्षिक रूप में गुणात्मक और मात्रात्मक परिवर्तन को ही ग्रामीण विकास माना जा सकता है। इस संकल्पना का प्रारम्भ अर्थशास्त्र में सबसे पहले हुआ है, जिसके अन्तर्गत विभिन्न विद्वानों जैसे एडम स्मिथ और रिकार्डो की संकल्पनायें, मार्क्स और एलिक्स की संकल्पना तथा नवीन पूँजीवादी संकल्पनायें आदि है। सर्वप्रथम 16वीं शताब्दी में अल्फ्रेड क्वेस ने विकास को धार्मिक आधार प्रदान किया। जिसमें उसने स्वीकार किया कि आर्थिक विकास अथवा व्यक्ति विशेष का धनाढ़य या निर्धन होना ईश्वर की देन हैं कालान्तर में फ्रांस के तत्कालीन समाज में आर्थिक विकास की इसी धारणा को बल प्रदान किया गया। जो पूरी तरह अवैज्ञानिक तथा व्यक्तियों एवं समुदायों पर केन्द्रित था। क्षेत्रीय सन्दर्भ में इसका कोई महत्व नहीं था।

यूरोप में आधुनिकीकरण के प्रारम्भ के साथ ही विभिन्न तथ्यों के वैज्ञानिक आधार की खोज होने लगी और इसी क्रम में 1776 में एडम स्मिथ ने प्रति व्यक्ति अधिक आय तथा सकल राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि को ही आर्थिक विकास के रूप में परिभाषित किया। उसी समय औद्योगिक तकनीकों के अविष्कार के साथ ही संसाधनों के तीव्र शोषण के साथ आर्थिक विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। एडम स्मिथ की संकल्पना को ही आधार मानकर प्रत्येक यूरोपीय देश अधिक से अधिक राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि की ओर अग्रसर हुए। इस संकल्पना के दुष्परिणाम समाज में असंतोष विशेषकर श्रमिक असन्तोष के रूप में सामने आये और एडम स्मिथ के 100 वर्ष बाद आर्थिक विकास सम्बन्धी अपना नया दर्शन प्रस्तुत करते हुए मार्क्स और एजिल्स ने आर्थिक विकास में संसाधनों एवं पूंजी के सामना वितरण पर बल दिया। कालान्तर में लेनिन ने तत्कालीन सोवियत रूस के सन्दर्भ में विश्व में सर्वप्रथम पंचवर्षीय योजनाओं का आरम्भ करके सन्तुलित और समान विकास की अवधारणा को व्यवहारिक स्वरूप प्रदान किया। इस प्रकार द्वितीय महायुद्ध तक अर्थशास्त्र एवं समाजशास्त्र में आर्थिक विकास का अध्ययन मूलतः अस्थायी था। कालान्तर में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद भूगोल वक्ताओं ने आर्थिक विकास के क्षेत्र के सन्दर्भ में अध्ययन करना प्रारम्भ किया। इनमें गिन्सवर्ग, हार्टशोर्न उल्लेखनीय भूगोलवक्ता रहे है। हार्टशोने ने विकास की क्षेत्रीय संकल्पना को स्पष्ट करते हुए यह मत व्यक्त किया कि – विकास एक निरपेक्ष शब्द नहीं है, बल्कि यह एक सापेक्षिक अर्थ वाला शब्द है। इसके अनुसार विकास की कोई अंतिम सीमा नहीं है। यह किसी क्षेत्र अथवा समुदाय के सन्दर्भ में तुलनात्मक रूप में प्रयोग किया जा सकता है। ग्रामीण विकास का तात्पर्य भौगोलिक रूप में क्षेत्र के परिवेश के ऐसे रूपान्तरण से है, जिसमें सामाजिक–आर्थिक संस्थागत तत्वों तथा उत्पादन प्रक्रिया और जनसंख्या के मध्य गुणात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। इस तरह ग्रामीण विकास विभिन्न तत्वों के गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। इस तरह ग्रामीण विकास विभिन्न तत्वों के गुणात्मक एवं मात्रात्मक परिवर्तन हेतु क्षेत्रीय नियोजन एवं क्रियान्वयन की एक संकल्पना है, जो मनुष्य के सर्वांगीण कल्याण से सम्बन्धित हैं।

भारत में समन्वित विकास की अवधारणा पिछली शताब्दी के तीसरे दशक की देन है। सर्वप्रथम 1921 में रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित "श्री निकेतन इंस्टीयूट ऑफ रूरल रिकन्ट्रक्शन" के माध्यम से योजनाबद्ध कार्यक्रम बनाया गया। सन् 1920 से 1938 ई0 के मध्य महात्मा गांधी द्वारा ग्राम पुनः निर्माण हेतु "सेवा ग्राम" के माध्यम से एक संरचनात्मक कार्यक्रम बनाया गया। सन् 1927 ई0 में एल0एल0 श्रेन द्वारा गुड़वांव जनपद की विभिन्न समस्याओं के समाधान के रूप में सहकारिता, शिक्षा, कृषि एवं सामाजिक सुधार आदि कार्यक्रमों के माध्यम से एक विकास कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसके पश्चात् 1932 ई0 में ग्रामीण विकास की दृष्टि से बड़ौदा में ग्रामीण विकास पुनः निर्माण योजना प्रारंभ की गई, जिसके अन्तर्गत आवागमन, संचार में सुधार, पेयजल, कुंआ निर्माण, मलेरिया उन्मूलन, चारागाह सुधार, सम बीजों का वितरण, गृह एवं हस्तशिल्प कला प्रशिक्षण, सहकारी एवं पंचायती संस्थाओं की स्थापना आदि उद्देश्यों को शामिल किया गया।

देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् समन्वित विकास हेतु अनेक कार्यक्रमों को संचालित किया गया एवं नियोजन के लघु स्तरीय प्रारूप को महत्व प्रदान किया गया, इसे कार्यात्मकता एवं स्थानीय संगठन ग्रामीण विकास संकल्पना के केन्द्रक हैं।4 कार्यात्मकता समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक कारकों का समन्वित प्रारूप है। यह आम जनजीवन को निरन्तर प्रभावित करती है तथा इसमें दिन–प्रतिदिन विकास प्रक्रियाओं से प्रभावित कृषि, उसपर आधारित उद्योग एवं अन्य धंधे केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह करते हैं। परिवहन, संचार, शिक्षा एवं अन्य स्थानीय सुविधाएं कार्यात्मक समन्वय को गति प्रदान कर जीवनस्तर को ऊँचा उठाने में आधारीय सहयोग प्रदान करती है।

उपर्युक्त तथ्यों के अवलोकन से स्पष्ट है कि समन्वित विकास, क्षेत्र के संतुलित विकास से सम्बन्धित है, जिसमें भौतिक परिवेश में सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं के निहितार्थ अवरिस्थति का निर्धारण विशेष महत्वपूर्ण है, जिसके फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को सामाजिक न्याय मिल सकता है।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के अर्थतंत्र का मूल आधार कृषि है, क्योंकि इस पर अध्ययन क्षेत्र की 80 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या कृषि पर आश्रित है। इसीलिए ग्रामीण विकास के प्रतिरूप को ज्ञात करने के लिए कृषि विकास प्रतिरूप ज्ञात करना आवश्यक है। हालांकि ग्रामीण विकास में कृषि प्रतिरूप के अन्य आयाम भी सम्बन्धित होते है। अध्ययन क्षेत्र जैसे लघु क्षेत्र के संदर्भ में विकासात्मक प्रवृत्तियों का प्रसार विभिन्न सामाजिक सुविधाओं के वितरण से भी होता है। भौगोलिक रूप से कृषि प्रधान अर्थतंत्र वाले क्षेत्र में तृतीयक कार्यो को संचालित करने वाले मार्ग केन्द्रों का भी विकास होता है। क्षेत्रीय अन्तरक्रिया के कारण ऐसे केन्द्र ही ग्रामीण विकास में अपना योगदान देते हैं। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन के संदर्भ में ग्रामीण विकास के दो आयामों कृषि विकास और कृष्योत्तर विकास के क्षेत्रीय प्रतिरूप को विभिन्न सूचकों के आधार पर ज्ञात किया गया है। पुनः दोनों को समन्वित करके ग्रामीण विकास के प्रतिरूप का निर्धारण किया गया है।

ग्रामीण विकास स्तर को ज्ञात करने के लिए विकासखण्ड के आधार पर विभिन्न सूचकांको जैसे– साक्षर व्यक्तियों के कुल जनंसख्या से प्रतिशत, पारिवारिक उद्योग में लगे कर्मकारकों का कुल कर्मकारों से प्रतिशत, सकल बोये गये क्षेत्रफल पर शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल से प्रतिशत, शुद्ध बोये गये क्षेत्र में नलकूपों द्वारा शुद्ध सिंचित क्षेत्र का प्रतिशत, विद्युतीकृत ग्रामों का कुल आवाद ग्रामों से प्रतिशत, प्रति लाख जनसंख्या पर कुल पक्की सड़कों की लम्बाई, प्रति लाख जनसंख्या पर लो0नि0वि0 द्वारा निर्मित पक्की सड़कों की लम्बाई, प्रति लाख जनसंख्या पर ऐलौपैथिक चिकित्सक, औषधालय एवं प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों की संख्या, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में उपलब्ध शैययाऐं, प्रति लाख जनसंख्या पर जूनियर बेसिक स्कूलों की संख्या, प्रति लाख जनसंख्या पर सीनियर बेसिक स्कूलों की संख्या, प्रति लाख जनंसख्या पर हायर सेकन्ड्री स्कूलों की संख्या आदि के आधार पर ग्रामीण विकास स्तर को निकाला जा सकता है (तालिका संख्या 1)।

**तालिका संख्या 1**

**गाजीपुर जनपद में ग्रामीण विकास स्तर**

| क्रम सं0 | स्तर | विकाखण्ड | कुल रैंक |
|---|---|---|---|
| 1 | अति उच्च स्तर | 3 | 170 > |
| 2 | उच्च स्तर | 4 | 150-170 |
| 3 | मध्यम स्तर | 3 | 120-150 |
| 4 | निम्न स्तर | 4 | 90-120 |
| 5 | अति निम्न स्तर | 2 | 90 < |
| | **योग** | **16** | |

**चित्र संख्या–2**

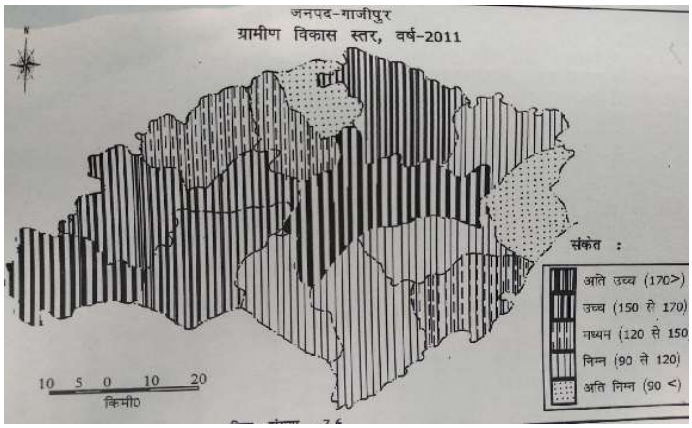


तालिका संख्या–1 एवं चित्र संख्या–2 से स्पष्ट है कि ग्रामीण विकास के स्तर गाजीपुर जनपद में अति उच्च में गाजीपर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद विकासखण्ड संयुकत रूप से पहले स्थान पर है तथा सबसे कम ग्रामीण विकास स्तर बड़ाचावर, मरदह विकासखण्ड का है। तालिका संख्या 1 से यह स्पष्ट है कि अति उच्च ग्रामीण विकास स्तर गाजीपुर , सैदपुर और मुहम्मदाबाद विकास खण्ड हैं। इसका कारण गाजीपुर शहर से विकसित मार्ग जाल एवं नजदीक होने से इन चारों विकासखण्डों का विकास स्तर अति उच्च है। उच्च स्तर में सदात (उत्तर–पष्चिम में), मनिहारी (उत्तर में), कासिमाबाद (उत्तर–पूर्व में), रेवतीपुर (पूर्व में) मे स्थित है। मध्यम स्तर में भदौरा (दक्षिणी–पूर्वी में), विरनी व जखनिया

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

(उत्तरी भाग में), निम्न विकास स्तर में जमानिया (दक्षिण भाग में) , करण्डा (मध्यवर्ती भाग में), भांरकोल (पूर्वी भाग) तथा अति निम्न स्तर में बड़ाचावर, मरदह विकास खण्ड हैं।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Srivastava, V.K. (1977): Periodic Markets and Rural Development : Bahraich District- A Case Study, National Geographer, Vol. 12, No. 1, PP- 47-55.
2. Belshaw, C.S. (1965): Traditional Exachange and Modern Markets, Prentice Hall, PP- 75-121.
3. Srivastava, V.K. and Udhaw Ram (1980): Periodic Markets as a strategy for Rural development, Paper presented at the 13th Regional Science Semminar, Indian Institute of Management, Banglore (Unpublished).
4. Smith, Adam (1976): An enguiryinto the nature and Causes of the Wealth of Nations, Compilled By Cannon, Edurin 1904, 1930 Endinburg, Guoted in S.K. Sharma (ed) Dyanamics of Development. An International Prespective PP-122-126.
5. Ricardo, David (1917): Principales of Political Economy and Taxation Everyman. P- 197. quoted by Thingran M.L. in Economics of Development Planning Konark Pub lishers , New Delhi, P- 90.
6. Marx, K. and Engles Federick (1984): Qrigin of Family, Private Propeerty and The State Taken from Morgan Lewis H. Ancient. Society Quoted by Engles bimself in Karl Marxs and Fredrick Engles. Selected Works in one volumen 1968. Progress Pulishers Moscow. P-461.
7. Quens, F (1966): Tableau Economical, Quoted by Dadayn V.S. (1981) Macro Economic Models Progress pulishers Moscow. P-9.
8. Smith, Adam (1976)

*****